३. गोदान

– प्रेमचंद

मौलिक सृजन

पाठ्यपुस्तक का कौन-सा पाठ और उसके लेखक आपको अच्छे लगते हैं, इसपर चर्चा कीजिए और अपना मत लिखिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से पसंदीदा पाठों के और लेखकों के नाम पूछें । ● पाठ का केंद्रीय विचार पूछें । ● लेखक की जानकारी पाने के लिए आवश्यक मुद्दे देकर चर्चा कराएँ ● उनका अपना मत लिखने के लिए प्रेरित करें ।

दूसरे दिन प्रातःकाल गोबर विदा होकर लखनऊ चला । होरी उसे गाँव के बाहर तक पहुँचाने आया । गोबर के प्रति इतना प्रेम उसे कभी न हुआ था । जब गोबर उसके चरणों पर झुका तो होरी रो पड़ा मानो फिर उसे पुत्र के दर्शन न होंगे । उसकी आत्मा में उल्लास था, गर्व था, संकल्प था। पुत्र से यह श्रद्‌धा और स्नेह पाकर वह तेजवान हो गया है, विशाल हो गया है । कई दिन पहले उसपर जो अवसाद-सा छा गया था, एक अंधकार-सा जहाँ वह अपना मार्ग भूल जाता था, वहाँ अब उत्साह और प्रकाश है ।

रूपा होरी की बेटी अपनी ससुराल में खुश थी । जिस दशा में उसका बालपन बीता था, उसमें पैसा सबसे कीमती चीज थी । मन में कितनी साधें थीं, जो मन ही में घुट-घुटकर रह गई थीं । वह अब उन्हें पूरा कर रही थी और रामसेवक अधेड़ होकर भी जवान हो गया था । रूपा के लिए वह पति था, उसके जवान, अधेड़ या बूढ़े होने से उसकी नारी-भावना में कोई अंतर न आ सकता था । उसकी वह भावना पति के रंग-रूप या उम्र पर आश्रित न थी, उसकी बुनियाद इससे बहुत गहरी थी, श्वेत परंपराओं की तह में, जो केवल किसी भूकंप से ही हिल सकती थी । उसका यौवन अपने ही में मस्त था, वह अपने ही लिए अपना बनाव-सिंगार करती थी और आप ही खुश होती थी । रामसेवक के लिए उसका दूसरा रूप था । तब वह गृहिणी बन जाती थी, घर के काम-काज में लगी हुई । किसी तरह की अपूर्णता का भाव उसके मन में न आता था । अनाज से भरे हुए बखार और गाँव से सिवान तक फैले हुए खेत और द्‌वार पर ढोरों की कतारें और किसी प्रकार की अपूर्णता को उसके अंदर आने ही न देती थी ।

उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी अपने घरवालों की खुशी देखना । उनकी गरीबी कैसे दूर कर दे ? उस गाय की याद अभी तक उसके दिल में हरी थी, जो मेहमान की तरह आई थी और सबको रोता छोड़कर चली गई थी । वह स्मृति इतने दिनों के बाद अब और भी मृदु हो गई थी । अभी उसका निजत्व इन नए घर में न जम पाया था । वही पुराना घर उसका अपना घर था । वहीं के लोग अपने आत्मीय थे, उन्हीं का दुख उसका दुख और उन्हीं का सुख था । इस द्‌वार पर ढोरों का एक रेवड़ देखकर उसे वह हर्ष न हो सकता था, जो अपने द्‌वार पर एक गाय देखकर होता । उसके

परिचय

जन्म : ३१ जुलाई १८८० लमही, वाराणसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** ८ अक्टूबर १९३६

परिचय : उपन्यास सम्राट, कलम के सिपाही प्रेमचंद जी का मूल नाम धनपत राय था । आप १३ वर्ष की उम्र में साहित्यकार की पंक्ति में खड़े थे । आप आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं । आपकी अधिकतर कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों आदि की समस्याएँ गंभीरता से चित्रित हुई हैं। आपने हिंदी कहानी और उपन्यास की ऐसी परंपरा विकसित की जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया ।

प्रमुख कृतियाँ : मानसरोवर १ से ८ भाग (कहानी संग्रह) गोदान, सेवासदन, निर्मला, गबन, रंगभूमि (उपन्यास), संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी (नाटक), टालस्टॉय की कहानियाँ, आजाद कथा, चाँदी की डिबिया आदि (अनुवाद) ।

गद्य संबंधी

उपन्यास : यह गद्‌य की लोकप्रिय विधा है। एक विस्तृत कथा जो अपने भीतर अन्य गौण कथाएँ समाहित किए रहती है । इस कथा के भीतर समाज और व्यक्ति की विविध अनुभूतियों और संवेदनाओं, अनेक प्रकार के दृश्य और घटनाओं के साथ-साथ अनेक प्रकार के चरित्र भी होते हैं ।

प्रस्तुत अंश 'गोदान' उपन्यास से लिया गया है । इसमें गरीबी से जूझते मानव जीवन का चरित्र, उसकी आंतरिक-बाह्‌य परि-स्थितियों से संघर्ष, उसके चारों ओर का वातावरण और जीवन के सत्य को बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है ।

दादा की यह लालसा कभी पूरी न हुई । जिस दिन वह गाय आई थी, उन्हें इतनी समाई ही न हुई कि कोई दूसरी गाय लाते; पर वह जानती थी, वह लालसा होरी के मन में उतनी ही सजग है । अबकी यह जाएगी तो साथ वह धौरी गाय जरूर लेती जाएगी । नहीं, और दूसरे दिन एक अहीर के मारफत रूपा ने गाय भेज दी । अहीर से कहा, 'दादा से कह देना, मंगल के दूध पीने के लिए भेजी है ।' होरी भी गाय लेने की फिक्र में था । यों अभी उसे गाय की कोई जल्दी न थी; मगर मंगल यहीं है और बिना दूध के कैसे रह सकता है ! रुपये मिलते ही वह सबसे पहले गाय लेगा । मंगल अब केवल उसका पोता नहीं है, केवल गोबर का बेटा नहीं है, मालती देवी का खिलौना भी है । उसका लालन-पालन उसी तरह का होना चाहिए ।

मगर रुपये कहाँ से आएँ ? संयोग से उसी दिन एक ठेकेदार ने सड़क के लिए गाँव के ऊसर में कंकड़ की खुदाई शुरू की । होरी ने सुना तो चट-पट वहाँ जा पहुँचा, और आठ आने रोज पर खुदाई करने लगा; अगर यह काम दो महीने भी टिक गया तो गाय भर को रुपये मिल जाएँगे । दिनभर लू और धूप में काम करने के बाद वह घर आता तो बिलकुल मरा हुआ; अवसाद का नाम नहीं । उसी उत्साह से दूसरे दिन काम करने जाता । रात को भी खाना खाकर डिब्बी के सामने बैठ जाता और सुतली कातता । कहीं बारह-एक बजे सोने जाता । धनिया भी पगला गई थी, उसे इतनी मेहनत करने से रोकने के बदले खुद उसके साथ सुतली कातती । गाय तो लेनी ही है, रामसेवक के रुपये भी तो अदा करने हैं । गोबर कह गया है उसे बड़ी चिंता है ।

रात के बारह बज गए थे । दोनों बैठे सुतली कात रहे थे । धनिया ने कहा- ''तुम्हें नींद आती हो तो जाके सो रहो । भोरे फिर तो काम करना है ।''

होरी ने आसमान की ओर देखा- ''चला जाऊँगा । अभी तो दस बजे होंगे । तू जा, सो रह ।''

''मैं तो दोपहर को छन-भर पौढ़ रहती हूँ ।''

''मैं भी चबेना करके पेड़ के नीचे सो लेता हूँ ।''

''बड़ी लू लगती होगी ।''

''लू क्या लगेगी ? अच्छी छाँह है ।''

''मैं डरती हूँ, कहीं तुम बीमार न पड़ जाओ ।''

''चल; बीमार वह पड़ते हैं, जिन्हें बीमार पड़ने की फुरसत होती है । यहाँ तो यह धुन है कि अबकी गोबर आए तो रामसेवक के आधे रुपये जमा रहें । कुछ वह भी लाएगा । बस, इस रिन से गला छूट जाए तो दूसरी जिंदगी हो ।'

''गोबर की अबकी बड़ी याद आती है । कितना सुशील हो गया है ।''

''चलती बेर पैरों पर गिर पड़ा ।''

''मंगल वहाँ से आया तो कितना तैयार था । यहाँ आकर दुबला हो गया है ।'' ''वहाँ दूध,मक्खन, क्या नहीं पाता था ? यहाँ रोटी मिल जाए, वही

संभाषणीय

'गोदान' उपन्यास के अंश में वर्णित 'होरी' की समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

लेखनीय

समाचार पत्र के किसी महत्त्वपूर्ण अंश का लिप्यंतरण एवं अनुवाद कीजिए ।

बहुत है । ठीकेदार से रुपये मिले और गाय लाया ।'' होरी बोला ।

''गाय तो कभी आ गई होती लेकिन तुम जब कहना मानो । अपनी खेती तो सँभाले न सँभलती थी, पुनिया का भार भी अपने सिर ले लिया ।''

''क्या करता, अपना धरम भी तो कुछ है । हीरा ने नालायकी की तो उसके बालबच्चों को सँभालने वाला तो कोई चाहिए ही था । कौन था मेरे सिवा बता ? मैं न मदद करता, तो आज उनकी क्या गति होती, सोच । इतना सब करने पर भी तो मँगरू ने उसपर नालिश कर ही दी ।''

''रुपये गाड़कर रखेगी तो क्या नालिश न होगी ?''

''क्या बकती है । खेती से पेट चल जाए, यही बहुत है । गाड़कर कोई क्या रखेगा !''

✲'हीरा तो जैसे संसार ही से चला गया ।'

'मेरा मन तो कहता है कि वह आवेगा, कभी-न-कभी जरूर ।'

दोनों सोए । होरी अँधेरे मुँह उठा तो देखता है कि हीरा सामने खड़ा है, बाल बढ़े हुए, कपड़े तार-तार, मुँह सूखा हुआ, देह में रक्त और मांस का नाम नहीं, जैसे कद भी छोटा हो गया है । दौड़कर होरी के कदमों में गिरा पड़ा ।

होरी ने उसे छाती से लगाकर कहा-''तुम तो बिलकुल घुल गए हीरा ! कब आए ? आज तुम्हारी बार-बार याद आ रही थी । बीमार हो क्या ?''

आज उसकी आँखों में वह हीरा न था, जिसने उसकी जिंदगी तल्ख कर दी थी; बल्कि वह हीरा था, जो माँ-बाप का छोटा-सा बालक था । बीच के ये पचीस-तीस साल जैसे मिट गए, उनका कोई चिह्न भी नहीं था ।

हीरा ने कुछ जवाब न दिया । खड़ा रो रहा था ।

होरी ने उसका हाथ पकड़कर गद्‌गद कंठ से कहा- ''क्यों रोते हो भैया, आदमी से भूलचूक होती ही है । कहाँ रहा इतने दिन ?''✲

हीरा कातर स्वर में बोला-''कहाँ बताऊँ दादा ! बस, यही समझ लो कि तुम्हारे दर्शन बदे थे, बच गया । हत्या सिर पर सवार थी । ऐसा लगता था कि वह गऊ मेरे सामने खड़ी है; हरदम, सोते-जगते, कभी आँखों से ओझल न होती । मैं पागल हो गया और पाँच साल पागलखाने में रहा । आज वहाँ से निकले छह महीने हुए । माँगता-खाता फिरता रहा । यहाँ आने की हिम्मत न पड़ती थी । संसार को कौन मुँह दिखाऊँगा ? कलेजा मजबूत करके चला आया । तुमने बाल-बच्चों को... ' ''तुमसे जीते-जी उरिन न हूँगा दादा !''

''मैं कोई गैर थोड़े हूँ भैया ।''

होरी प्रसन्न था । जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं । कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है । यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं ? इन्हीं हारों में उसकी विजय है । उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं । उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है । हीरा की कृतज्ञता में उसके जीवन की सारी सफलता

पठनीय

किसी संवाद के केंद्रीय विचार को समझते हुए मुखर एवं मौन वाचन कीजिए ।

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए : -

(१) संजाल पूर्ण कीजिए

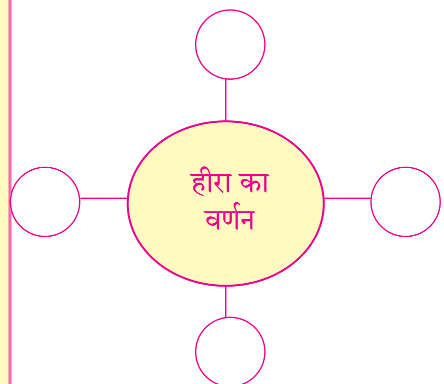

(२) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(क) होरी की आँखों में वह हीरा था जो ....

(ख) होरी अँधेरे मुँह उठा तो देखता है कि ....

(३) परिच्छेद में आए हुए शरीर के किसी एक अंग पर प्रयुक्त मुहावरा लिखिए ।

(४) 'आदमी से भूलचूक होती ही है', इसपर अपने विचार लिखिए ।

श्रवणीय

यू-ट्यूब पर 'कोळी गीत' सुनिए और उसकी लय-ताल के साथ प्रस्तुति कीजिए ।

मूर्तिमान हो गई है । उसके बखार सौ-दो-सौ मन अनाज भरा होता उसकी हाँड़ी में हजार-पाँच सौ गड़े होते, पर उससे यह स्वर्ग का सुख क्या मिल सकता था ?

हीरा ने उसे सिर से पाँव तक देखकर कहा-''तुम भी तो बहुत दुबले हो गए दादा !'' होरी ने हँसकर कहा-'तो क्या यह मेरे मोटे होने के दिन हैं ? मोटे वह होते हैं, जिन्हें न रिन का सोच होता है, न इज्जत का । इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है । सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है । ऐसे मोटेपन में क्या सुख ? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों । सोभा से भेंट हुई ?'

'उससे तो रात ही भेंट हो गई थी । तुमने तो अपनों को भी पाला, जो तुमसे बैर करते थे, उनको भी पाला और अपना मरजाद बनाए बैठे हो ! उसने तो खेती-बारी सब बेच-बाच डाली और अब भगवान ही जाने, उसका निबाह कैसे होगा ?''

आज होरी खुदाई करने चला तो देह भारी थी । रात की थकन दूर न हो पाई थी; पर उसके कदम तेज थे और चाल में निर्द्वंदता की अकड़ थी ।

आज दस बजे ही से लू चलने लगी और दोपहर होते-होते तो आग बरस रही थी । होरी कंकड़ के झौवे उठा-उठाकर खदान से सड़क पर लाता था और गाड़ी पर लादता था । जब दोपहर की छुट्‌टी हुई तो वह बेदम हो गया था । ऐसी थकन उसे कभी न हुई थी । उसके पाँव तक न उठते थे । देह भीतर से झुलसी जा रही थी । उसने न स्नान ही किया न चबेना । उसी थकन में अपना अँगोछा बिछाकर एक पेड़ के नीचे सो रहा मगर प्यास के मारे कंठ सूखा जाता है । खाली पेट पानी पीना ठीक नहीं । उसने प्यास को रोकने की चेष्टा की लेकिन प्रतिक्षण भीतर की दाह बढ़ती जाती थी । न रहा गया । एक मजदूर ने बाल्टी भर रखी थी और चबेना कर रहा था । होरी ने उठकर एक लोटा पानी खींचकर पिया और फिर आकर लेट रहा; मगर आधा घंटे में उसे कै हो गई और चेहरे पर मुर्दनी-सी छा गई ।

उस मजदूर ने कहा- ''कैसा जी है होरी भैया ?''

होरी के सिर में चक्कर आ रहा था । बोला-''कुछ नहीं, अच्छा हूँ ।''

यह कहते-कहते उसे फिर कै हुई और हाथ-पाँव ठंडे होने लगे । यह सिर में चक्कर क्यों आ रहा है ? आँखों के सामने कैसा अँधेरा छाया जाता है । उसकी आँखें बंद हो गईं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं; लेकिन बे क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असबंद्‌ध, वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था । फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों पर गिर रहा है । फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुँदरी पहने उसको भोजन करा रही थी । फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिलकुल कामधेनु-सी । वह उसका दूध मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गई और...

मौलिक सृजन

'होरी के जीवन में 'परिवार और गाय' दो ही शीर्षस्थ थे,' सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=244&pageno=1

उसी मजदूर ने फिर पुकारा-''दोपहरी ढल गई होरी, चलो झौवा उठाओ ।''

होरी कुछ न बोला । उसके प्राण तो न जाने किस-किस लोक में उड़ रहे थे । उसकी देह जल रही थी, हाथ-पाँव ठंडे हो रहे थे । लू लग गई थी।

उसके घर आदमी दौड़ाया गया । एक घंटा में धनिया दौड़ी हुई आ पहुँची । शोभा और हीरा पीछे-पीछे खटोले की डोली बनाकर ला रहे थे।

धनिया ने होरी की देह छुई तो उसका कलेजा सन से हो गया । मुख कांतिहीन हो गया था । काँपती हुई आवाज से बोली-'कैसा जी है तुम्हारा ?' होरी ने अस्थिर आँखों से देखा और बोला-''तुम आ गए गोबर ? मैंने मंगल के लिए गाय ले ली है । वह खड़ी है, देखो ।''

उमड़ते हुए आँसुओं को रोककर बोली-''मेरी ओर देखो, मैं हूँ, क्या मुझे नहीं पहचानते ?'' होरी की चेतना लौटी । मृत्यु समीप आ गई थी; आग दहकने वाली थी । धुआँ शांत हो गया था । धनिया को दीन आँखों से देखा, कोनों से आँसू की दो बूँदें ढुलक पड़ीं । क्षीण स्वर में बोला-'मेरा कहा-सुना माफ करना धनिया ! अब जाता हूँ । गाय की लालसा मन में ही रह गई । अब तो यहाँ के रुपये क्रिया-करम में जाएँगे । रो मत धनिया, अब कब तक जिलाएगी ? सब दुर्दशा तो हो गई । अब मरने दे ।'' और उसकी आँखें फिर बंद हो गईं । उसी वक्त हीरा और शोभा डोली लेकर पहुँच गए । होरी को उठाकर डोली में लिटाया और गाँव की ओर चले ।

गाँव में यह खबर हवा की तरह फैल गई । सारा गाँव जमा हो गया । होरी खाट पर पड़ा शायद सब-कुछ समझता था; पर जबान बंद हो गई थी । हाँ, उसकी आँखों से बहते आँसू बतला रहे थे कि मोह का बंधन तोड़ना कितना कठिन हो रहा है । जो कुछ अपने से नहीं बन पड़ा उसी के दुख का नाम मोह है । पाले हुए कर्तव्य और निपटाए हुए कामों का क्या मोह तो उन अनाथों को छोड़ जाने में है, जिनके साथ हम अपना कर्तव्य न निभा सके; उन अधूरे मंसूबों में है, जिन्हें हम न पूरा कर सके ।

मगर सब कुछ समझकर भी धनिया आशा की मिटती हुई छाया को पकड़े हुए थी । आँखों से आँसू गिर रहे थे, मगर यंत्र की भाँति दौड़-दौड़कर कभी आम भूनकर पना बनाती, कभी होरी की देह में गेहूँ की भूसी की मालिश करती । क्या करे, पैसे नहीं हैं, नहीं किसी को भेजकर डॉक्टर बुलाती ।

हीरा ने रोते हुए कहा-''भाभी, दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले ।''

धनिया ने उसकी ओर तिरस्कार की आँखों से देखा । अब वह दिल को और कितना कठोर करे ? अपने पति के प्रति उसका जो कर्म है, क्या वह उसको बताना पड़ेगा ? जो जीवन का संगी था, उसके नाम को रोना ही

आसपास

किसी विषय से संबंधित जानकारी का प्रस्तुतीकरण करने हेतु पी.पी.टी. के मुद्दे बनाइए ।

क्या उसका धर्म है ?

और कई आवाजें आईं–''हाँ, गो–दान करा दो, अब यही समय है ।''

धनिया यंत्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लाई और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली– ''महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं, यहीं इनका गोदान है और पछाड़ खाकर गिर पड़ी ।''

—०—

('गोदान' से)

पाठ से आगे

ऑनलाइन सुविधा का उपयोग करते हुए बस/रेल टिकट का आरक्षण कीजिए ।

7HCHHH

शब्द संसार

बखार (पुं.दे.) = वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं।
सिवान (पुं.दे.) = हद, सीमा
साधें (स्त्री.सं.) = अभिलाषा, उत्कंठा
रेवड़ (पुं.दे.) = भेड़, बकरियों आदि का झुंड
ऊसर (पुं.सं.) = अनुपजाऊ जमीन
नालिश (पुं.फा.) = फरियाद, अभियोग
पुलक (पुं.सं.) = रोमांच
झौवे (पुं.दे.) = अरहर की बनी हुई दौरी
पौढ़ना (क्रि.) = लेटना
चबेना (पुं.दे.) = चर्वण करने के अनाज

मुहावरा :

पछाड़ खाकर गिरना = मूर्छित होकर गिरना

पाठ के आँगन में

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए : –

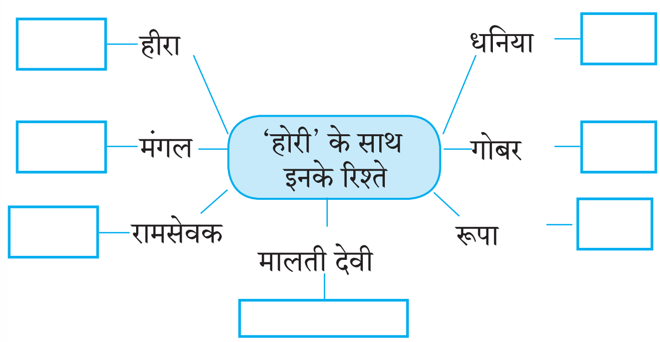

(२) लू लगने के बाद होरी की स्थिति

(३) (क) कहीं, कोई इन सर्वनामों का उपयोग करके अर्थपूर्ण वाक्य तैयार कीजिए ।

(ख) पाठ में प्रयुक्त मुहावरे ढूँढ़कर उनका अर्थ लिखिए तथा वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(४) देहदान की संकल्पना स्पष्ट करते हुए उसका महत्त्व बताइए।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

✻ निम्न संवाद को पढ़िए, समझिए तथा कारक रेखांकित करके उनके चिह्नों के नाम लिखिए :–

जंगल के राजा शेरसिंह टेलीविजन पर समाचार देख रहे थे, कई समाचार बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं के बारे में थे, वे इसके समाधान के लिए कुछ करना चाहते थे –

शेरसिंह – जंबो हाथी को बुलाया जाए ।

सेवक – जो आज्ञा महाराज ।

जंबो – प्रणाम महाराज, आपने मुझे याद किया ।

शेरसिंह – जंगल में सड़क दुर्घटनाएँ बहुत बढ़ गई हैं । लोग नियमों से दूर जा रहे हैं । इससे मैं बहुत दुखी हूँ ।

जंबो – चिंता न करें, मैं इस मामले में आपकी सहायता करूँगा । मुझे रिपोर्ट बनाने के लिए समय दें ।

शेरसिंह – जंबो ! तुम पूरा समय लो ।

(कुछ दिनों बाद रिपोर्ट लेकर जंबो पहुँचा ।)

जंबो – महाराज, जंगल निवासी ट्रैफिक के नियमों का पालन नहीं करते हैं ।

शेरसिंह – ठीक है, हम नागरिकों से ट्रैफिक के नियमों का सख्ती से पालन करवाएँगे ।

जंबो – दोपहिया चलाने वालों को हेल्मेट पहनना और कार चलाने वालों को सीट बेल्ट बांधना अनिवार्य कर सकते हैं ।

शेरसिंह – विद्यालयों, अस्पतालों और पार्किंगवाले स्थानों के पास गति सीमा को बताने वाले चिह्नों को क्यों न लगा दिया जाए ?

जंबो – महाराज, साइकिल चलाने वालों और पैदल चलने वालों के लिए आप एक अलग से रास्ता बनवा सकते हैं ।

शेरसिंह – तुम्हारी सलाह के लिए तुम्हें धन्यवाद ।

क्र.	कारक	कारक चिह्न	क्र.	कारक	कारक चिह्न